

मुख-संभव पुं. (तत्.) ब्राह्मण वि. मुख से निकला हुआ।

मुख-संभव पुं. (तत्.) अपने मुख की सुविधा, आदत या अभ्यास आदि के कारण वर्णों का उच्चारण उसी के अनुरूप करना जो कि प्रायः मूल उच्चारण से भिन्न होता है।

मुखस्थ वि. (तत्.) 1. जो कंठस्थ हो जाए 2. मुँह में आया हुआ या रखा हुआ।

मुख-स्राव पुं. (तत्.) 1. थूक, लार 2. मुँह से लगातार लार गिरने का रोग।

मुखांग पुं. (तत्.) जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की ओर से बोल रहा हो।

मुखाकृति स्त्री. (तत्.) मुखमंडल, मुख, चेहरा।

मुखाग्नि स्त्री. (तत्.) 1. मरने के बाद चिता में शव के मुख में दी जाने वाली अग्नि 2. मुख में अग्नि देने की प्रथा 3. दावानल 4. ब्राह्मण।

मुखाग्र पुं. (तत्.) 1. मुख का अगला भाग या होंठ 2. किसी पदार्थ का अग्र भाग वि. जो कंठस्थ हो।

मुखातिब वि. (अर.) 1. किसी से कुछ कहा जाए या संबोध्य 2. किसी से बात कहने, सुनने या देखने की ओर प्रवृत्त वि. संबोधनकर्त्ता।

मुखापेक्षक वि. (तत्.) दे. मुखापेक्षी।

मुखापेक्षा स्त्री. (तत्.) सहायता के लिए विवश होकर दूसरों का मुँह ताकते रह जाना।

मुखापेक्षी पुं. (तत्.) किसी के मुँह की ओर ताकने अर्थात् उसकी कृपा की अपेक्षा रखने वाला, दूसरों की कृपा पर आश्रित रहने वाला।

मुखामय पुं. (तत्.) मुख में होने वाला रोग।

मुखारविंद पुं. (तत्.) कमल के समान कोमल और आकर्षित मुख।

मुखारि स्त्री. (तत्.) 1. मुख की बनावट 2. किसी वस्तु का ऊपरी या सामने वाला भाग।

मुखालिफ वि. (अर.) 1. विरोधी 2. प्रतिद्वंद्वी पुं. दुश्मन, शत्रु।

मुखालिफत स्त्री. (अर.) 1. मुखालिफ होने की अवस्था या भाव 2. डटकर किया गया विरोध 3. शत्रुता।

मुखासमत स्त्री. (अर.) 1. कलह 2. विवाद 3. शत्रुता 4. विरोध।

मुखासव पुं. (तत्.) 1. थूक 2. लार।

मुखास्त्र पुं. (तत्.) केकड़ा।

मुखिया पुं. (तत्.) 1. वह जो अपने समाज में मुख्य या प्रधान हो 2. ब्रिटिश काल से प्रचलित किसी गाँव आदि में अधिकार प्राप्त प्रधान व्यक्ति 3. वल्लभ संत्रदाय का वह व्यक्ति जो मूर्ति-पूजक होता है 4. स्वतंत्र भारत में गाँव या मंडल का प्रधान।

मुखी वि. (तत्.) 1. मुख से युक्त या मुख वाला 2. किसी विशिष्ट दिशा की ओर मुख वाला जैसे- अंतर्मुखी, सूर्यमुखी आदि।

मुखुली स्त्री. (तत्.) एक बौद्ध देवी।

मुखौटा पुं. (तद्.) 1. मुख का अल्प भाग 2. अन्य रूप धारण करने या मुख को छिपाने के लिए मुख के आकार की बनी आकृति 3. विशिष्ट संदर्भ में दिखावटी चेहरा या भाव प्रयो. आज मनुष्य को पहचानना कठिन है क्योंकि उसने न जाने कितने मुखौटे पहन रखे हैं।

मुखतलिफ वि. (अर.) 1. पृथक, भिन्न 2. अनेक प्रकार का।

मुखतसर वि. (अर.) 1. संक्षिप्त, घटाया या छोटा किया हुआ 2. संक्षेप में लाया हुआ 3. अल्प, थोड़ा।

मुखतार पुं. (अर.) दे. मुखतार।

मुख्य वि. (तत्.) 1. जो सबसे आगे बढ़ा हुआ या प्रधान और विशेष रूप में हो 2. अधिक महत्वपूर्ण या सार रूप में प्रयो. इस लेख की मुख्य बातें ही बता दो पुं. 1. यज्ञ का पहला कल्प 2. वेदों का अध्ययन और अध्यापन।

मुख्य-चांद्रमास पुं. (तत्.) चांद्र मास के दो खंडों में से एक जो शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होकर